Sem. 4, MJ-6

भाषा के अंग

'भाष्' धातु से निर्मित 'भाषा' शब्द का विचार किसी मानव-समुदाय द्वारा वाक्-यंत्रों की सहायता से उच्चरित उन ध्वनि-संकेतों से है, जिसका उद्देश्य परस्पर विचार-विनिमय होता है। वस्तुतः भाषा मानव जाति का महत्त्वपूर्ण आविष्कार है, जिसपर संपूर्ण मानव-समाज का अधिकार होता है। भाषा के अनेक अंग होते हैं, जिनके संयोग से ही भाषा रूपी शरीर का निर्माण हो पाता है। भाषा-वैज्ञानिकों ने भाषा रूपी शरीर के जिन विभिन्न अंगों को स्वीकारा है, उनका विस्तृत अध्ययन भाषा-विज्ञान करता है।—

1. ध्वनि :- भाषा का मूल आधार मानव-मुख से उच्चरित ध्वनियाँ ही हैं। मानव अपने स्वर-तंत्रियों एवं वाक्-यंत्रों की सहायता से विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का उच्चारण करता है, जिससे भाषा का निर्माण हो पाता है। ध्वनियों के उच्चारण में मुख-विवर और नासिका-विवर के साथ जीभ और श्वास-नलिका द्वारा फेफड़ा से उत्सर्जित हवा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

2. रूप या पद :- मानव-मुख से उच्चरित ध्वनियों के योग से मानव-समाज अनेक शब्दों का उच्चारण करता है, जिनके यादृच्छिक अर्थ होते हैं। विचार-विनिमय के क्रम में मानव जिस भाषा का उपयोग करता है, उसमें कई शब्दों का स्थान होता है। इस क्रम में जिन शब्दों का उपयोग होता है, वे अनेक व्याकरणिक रूपों से जुड़कर आते हैं। कारक, लिंग, वचन, पुरुष, वाच्य, काल आदि संबंध-तत्वों से जुड़कर शब्द का जो रूप भाषा में व्यवहृत होता है, उसे ही 'पद' कहते हैं। अर्थात्, भाषा में शब्द का मूल रूप में नहीं, बल्कि संबंध-तत्वों से जुड़कर नये रूप में पद-रूप में व्यवहार किया जाता है।

3. वाक्य :- भाषा की महत्वपूर्ण इकाई वाक्य है। मानव अपनी आकांक्षा-विचार-भाव की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्य द्वारा ही संभव हो पाती है। हर भाषा का वाक्य-निर्माण-प्रक्रिया में एक निश्चित पद-क्रम और पदों का अन्वय होता है। यह वाक्य-रचना विभिन्न परिस्थितियों या आकांक्षा-पूर्ति के उद्देश्यों से नियंत्रित होती है। किन्तु वाक्य से ही भाषा के उद्देश्य - विचार-विनमय का कार्य संपन्न हो पाता है, अतः यह भाषा का महत्वपूर्ण अंग है।

4. अर्थ :- उपर्युक्त तीनों अंगों से भाषा-शरीर के निर्माण की प्रक्रिया पूरी होती है, किन्तु वह निष्प्राण होता है, जबतक उसमें अर्थ रूपी आत्मा का योग नहीं होता। किसी शब्द के अर्थ का निर्धारण, उसके विभिन्न स्तरों, अर्थ के विकास के विभिन्न चरणों तथा विकास के विभिन्न कारणों का प्रभाव भाषा में प्रयुक्त शब्दों या वाक्यों के व्यवहार पर पड़ता है। इस दृष्टि से, अर्थ का भाषा के अंग के रूप में पहचान आवश्यक होती है।

भाषा के इन चारों प्रधान अंगों की पहचान अधोलिखित उदाहरण के द्वारा की जा सकती है —

"राम ने रोटी खायी।"

① ध्वनि :- यहाँ वक्ता द्वारा र् आ म् अ न् ए र् ओ ट् ई ख् आ य् ई ध्वनियाँ अपने मुख से उच्चारित की गयीं।

② पद :- यहाँ वक्ता द्वारा राम, रोटी और खाना शब्दों का संबंध तत्व से जुड़कर व्यवहार किया गया, जिससे ये पद बने
- राम ने :- कर्ता कारक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य से जुड़े।
- रोटी - कर्म कारक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य से जुड़े।
- खायी - क्रिया पद, सकर्मक, भूतकाल, स्त्रीलिंग से जुड़े।

③ वाक्य :- वाक्य में यहाँ पहले कर्ता पद, फिर कर्म पद एवं अंत में क्रिया पद का क्रम आया।

4. ~~वाक्य~~ अर्थ :→ इस वाक्य द्वारा वक्ता का संदेश श्रोता तक पहुँच पाता है कि वह राम के रोटी खाने की सूचना देता है।

स्पष्ट है कि, भाषा के उपर्युक्त सभी अंगों का आधार लेकर ही मानव अपनी आकांक्षा की पूर्ण अभिव्यक्ति कर पाता है। इनमें से किसी भी अंग की उपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि एक के भी अभाव में भाषा अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाती।

=